B.A Part I Sociology (Hons.)
29/07/2020 Paper II - ~~Sociology~~ Social Thinker
Topic - Social Statics and Social Dynamics
By - Himanshu Shekhar

सामाजिक स्थितिकी एवं सामाजिक गतिकी

कॉम्टे ने समाजशास्त्र को दो प्रमुख भागों में बाँटा है - सामाजिक स्थिति विज्ञान और सामाजिक गति विज्ञान। सामाजिक स्थिति विज्ञान समाज की संरचना से संबंधित है जबकि सामाजिक गति विज्ञान उसके विकास से।

सामाजिक स्थिति विज्ञान -
सामाजिक स्थितिविज्ञान समाजशास्त्र की वह शाखा है जो कि समाज का पूर्ण विभाग के रूप में अध्ययन करती है। दूसरे शब्दों में सामाजिक व्यवस्था या संरचना के अंतर्गत अनेक भाग होते हैं, सामाजिक स्थितिविज्ञान इन समस्त भागों का अलग-अलग नहीं बल्कि एक संपूर्ण व्यवस्था के रूप में अध्ययन करता है। यह सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न भागों की क्रिया और प्रतिक्रिया के नियमों को खोजने का प्रयत्न करता है। सामाजिक स्थिति विज्ञान का संबंध कॉम्टे के अनुसार सामाजिक सावयव के ऐकमत्य (Consensus of the Social Organism) से है जिनका अर्थ अन्योन्याश्रित भागों में सामंजस्य का होना है। कॉम्टे ने इस ओर संकेत किया है कि सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न भागों तथा समग्र में सदैव ही एक स्वतः प्रवृत सामंजस्य होना चाहिए और इसके तत्वों को अनिवार्य रूप में किसी-न-किसी समय एक प्रतिरूप में संयुक्त हो जाना चाहिए। इन तत्वों में केवल राजनीतिक संस्थाओं सामाजिक व्यवहारों तथा विचारों का ही आपस में संयुक्त होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि मानव की बौद्धिक, नैतिक तथा भौतिक क्रियाओं में भी उचित सामंजस्य होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

सामाजिक गति विज्ञान -

सामाजिक गति विज्ञान मानव के विकास या प्रगति का अध्ययन है। इसके अंतर्गत वे निश्चित नियम आ जाते हैं जिनके अनुसार समाज का क्रमिक विकास या परिवर्तन होता है। सामाजिक गति विज्ञान का उद्देश्य उन नियमों को खोजना है जोकि इस निरंतरता को निर्देशित करते हैं और जो संयुक्त रूप से मानव विकास की दिशा निर्धारित करते हैं। इस प्रकार इस विज्ञान का प्रमुख कार्य सामाजिक प्रगति के वास्तविक सिद्धांत को प्रतिपादित करना है।

Scanned with CamScanner